एम्पायर स्टेट 75 साल का सफर

माइकल जे फ्राइडमैन

यह गगनचुंबी इमारत पूरी दुनिया में न्यूयॉर्क का प्रतीक है।

भवन निर्माण के मामले में पिछले कोई सौ सालों के दौरान इंसान ने एक नया इतिहास रचा है। स्टील में लिपटी आसमान छूने को बेताब इमारतें इंसानी कल्पना की नई प्रतीक हैं। लुइस सुलीवान ऐसी इमारतों के वास्तुविद् हैं। उन्हें गगनचुंबी इमारतों का जनक भी कहा जाता है। उनके मुताबिक ऐसी इमारतों को बनाना इंसान की शक्ति और क्षमता के लिए एक बेहद शानदार और आकर्षक चुनौती है। वह कहते हैं कि इन इमारतों में ऊंचाई का बल और ताकत तो हो ही, खुशी की चमक और गर्व भी इनमें झलके।

लुइस की इस कसौटी पर न्यूयॉर्क सिटी की एम्पायर स्टेट बिल्डिंग से ज्यादा खरी और कोई इमारत शायद ही उतरती हो। इस बिल्डिंग ने अभी इसी मई में अपनी 75वीं सालगिरह मनाई है। यह इमारत भले ही अब दुनिया, और यहां तक कि अमेरिका की भी सबसे ऊंची इमारत न रही हो, पर अब भी यह एक मिसाल है। अमेरिकन सोसायटी ऑफ सिविल इंजीनियर्स ने इसे अमेरिकी इतिहास में इंजीनियरिंग की सात महान उपलब्धियों और पिछले हजार सालों के इंजीनियरिंग के शीर्ष स्मारकों में से एक करार दिया है। यह बेमिसाल इमारत कला और डिजाइनिंग का अद्भुत मिश्रण है और न्यूयॉर्क के मैनहट्टन इलाके का खास आकर्षण भी।

तकनीकी क्षेत्र में हुई तरक्की ने आज आधुनिक गगनचुंबी इमारतों के निर्माण को आसान बनाया है। भवन

जॉन कैस्ट्रो © ए.पी. ट्रेवल्स ऑफ यू.पी.

बाएं: एम्पायर स्टेट बिल्डिंग को रात में जगमगाने के लिए रंगों का प्रतीकात्मक प्रयोग होता है। वर्ष 1990 में 31 अगस्त को लाल, सफेद और नीले रंग का इस्तेमाल अमेरिकी सैन्य दस्तों के प्रति सम्मान जताने के लिए किया गया।

निर्माण के लिए स्टील, कांच और कंक्रीट तो जरूरी था ही, वाटर पंप भी अनिवार्य था, ताकि ऊंचाई पर पानी पहुंचाया जा सके। अमेरिका के एलिश ओटिस ने 1853 में सुरक्षा एलीवेटर और जर्मनी के वेर्नर वॉन सीमेन्स ने 1880 में इलेक्ट्रिक एलीवेटर का आविष्कार किया, जिसके कारण ऊंची इमारतों के निर्माण में आसानी होने लगी।

एम्पायर स्टेट बिल्डिंग का निर्माण ऐसे दौर में हुआ, जब अमेरिकी वास्तुकला पर सजावटी कला का पूरा प्रभाव था। भवनों की डिजाइनिंग के साथ ही उनकी कलात्मक सजावट पर खासा ध्यान दिया जाता था। इस बात का विशेष खयाल रखा जाता था कि डिजाइन की रेखाएं एकदम सीधी और एकसमान हों। इस शैली का सबसे खूबसूरत उदाहरण 282 मीटर ऊंची क्रिस्लर बिल्डिंग है, जो 1930 में पूरी हुई। उस समय यह दुनिया की सबसे ऊंची इमारत थी। इसे यह मुकाम दिलाने के लिए अंतिम क्षणों में इसकी ऊंचाई 60 सेंटीमीटर बढ़ाई गई। इस तरह ऊंचाई की दौड़ में इसने निचले मनहट्टन के 40, वॉल स्ट्रीट टॉवर को पछाड़ दिया। न्यूयॉर्क की ज्यादातर गगनचुंबी इमारतें मैनहट्टन में ही हैं।

एम्पायर स्टेट बिल्डिंग को जॉन जे. रास्कॉब नामक बिल्डर ने बनाया। जॉन पहले जनरल मोटर्स कॉरपोरेशन में एक्जीक्यूटिव थे और क्रिस्लर बिल्डिंग से ऊंची इमारत बनाना उनका सपना था। उन्होंने इस काम के लिए रिचमंड एच. श्रीव तथा विलियम एफ. लैम्ब नाम के दो वास्तुविदों की सेवाएं लीं और उनसे एक ऐसी बिल्डिंग डिजाइन करने को कहा जो 300 मीटर से भी ज्यादा ऊंची हो। दोनों ने रास्कॉब की इच्छा के मुताबिक ऐसी इमारत को डिजाइन किया और अपने इंजीनियरिंग कौशल को नई ऊंचाइयां देते हुए इसके शीर्ष पर एक 60 मीटर ऊंचा मास्ट (इसे हम मस्तूल भी कह सकते हैं) बनाया। इस मास्ट को देखने से ऐसा लगता है, मानो यह जहाजों और नावों के लंगर डालने के लिए आने का इंतजार कर रहा हो। इसके बनने पर तब वॉल स्ट्रीट जर्नल ने लिखा था– बैवल की मीनारों के बाद यह मास्ट एक सबसे बड़ा उन्माद भरा कारनामा है। पर कुछ भी हो, इसने एक बिल्डिंग के माथे पर अनोखा ताज तो सजा ही दिया है।

एम्पायर स्टेट को बनाने के लिए नींव खोदने का काम 34 एवं 35 स्ट्रीट के बीच 350 फिफ्थ एवेन्यू में जनवरी 1930 में शुरू हुआ और मार्च से इसका निर्माण शुरू हो गया। आपको यह जानकर ताज्जुब होगा कि सिर्फ 410 दिन में यह इमारत बन गई। इसके निर्माण में 3400 मजदूर लगे हुए थे जिनमें अप्रवासी भी थे।

तत्कालीन राष्ट्रपति हरबर्ट हूवर ने इस भवन की लाइटें ऑन कर इसका उद्घाटन किया। इसमें 102

© ए.पी.–डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

ऊपर: एम्पायर स्टेट बिल्डिंग के निर्माण के दौरान 1930 में 86वीं मंजिल पर एक गिर्डर पर आराम करता मजदूर।

मंजिलें बनाई गईं और इसकी ऊंचाई थी 381 मीटर। 1952 में इस पर एक टीवी ट्रांसमीटर भी स्थापित किया गया और तब इसकी ऊंचाई 448 मीटर हो गई। बिल्डिंग का अनुमानित वजन 330,000 मीट्रिक टन था और इसमें 185,700 वर्गमीटर फ्लोर स्पेस था। एम्पायर स्टेट के विशिष्ट आकार ने कई और भवनों के निर्माण के लिए प्रेरणा का काम किया। इनमें प्रमुख हैं, उत्तरी कैरोलाइना के विंस्टन सालेम इलाके की रेनॉल्ड्स बिल्डिंग और मेक्सिको सिटी की टोर लैटिनोअमेरिकाना बिल्डिंग। रेनॉल्ड्स का डिजाइन भी श्रीव और लैम्ब ने ही तैयार किया था। एम्पायर स्टेट बिल्डिंग न्यूयॉर्क शहर की पहचान है। इसकी खूबसूरती और अद्भुत शिल्प के कारण हर साल लाखों लोग इसे देखने आते हैं। हॉलीवुड के अनेक निर्माताओं ने इसे अपनी फिल्मों में दिखाया है। मशहूर फिल्म *किंगकांग* (जो कि मूलत: 1933 में रिलीज हुई थी और 1976 तथा 2005 में दोबारा से बनाई गई) में एक विशालकाय गोरिल्ला एम्पायर स्टेट पर चढ़ जाता है, उसने हाथों में एक महिला को पकड़ रखा होता है और साथ ही वह लड़ाकू विमानों का सामना करता है

वास्तविक जिंदगी और फिल्मों (मसलन, 1957 में बनी *एन अफेयर टु रिमेम्बर* और 1993 की *स्लीपलेस इन सीएटल*) में एम्पायर स्टेट को रोमांस के लिए एक पसंदीदा जगह माना जाता है। इसकी 86वीं मंजिल पर न्यूयॉर्क शहर का नजारा देखने के लिए कुछ खुली जगह छोड़ी गई है। वैलंटाइंस डे पर यहां बड़ी तादाद में सामूहिक शादियां होती हैं। वर्ष 2005 में करीब 38 लाख लोग एंपायर स्टेट से न्यूयॉर्क को निहारने पहुंचे थे। *एन अफेयर टु रिमेम्बर* में इसी जगह पर खड़े होकर एक पात्र कहता है कि अगर न्यूयॉर्क में कोई जगह जन्नत के करीब है, तो वह यही है।

एम्पायर स्टेट बिल्डिंग कई और आकर्षणों और घटनाओं की भी स्थली है। हर साल कई स्त्री–पुरुष इस इमारत की 86वीं मंजिल तक सीढ़ियों से दौड़ते हुए पहुंचते हैं। इस साल के आखिर तक यहां एक कार्टून संग्रहालय भी खुल जाएगा, जिसमें 50 से भी ज्यादा देशों के करीब दो लाख कार्टून रखे जाएंगे। यह बिल्डिंग जब रात में रोशनी में नहाती है तो यह इसका खास प्रतीक होता है। कई शामें ऐसी भी होती हैं, जब यहां न्यूयॉर्क की किसी प्रोफेशनल खेल टीम की ड्रेस के रंग की रोशनी होती है। संयुक्त राष्ट्र के लिए यह नीले और सफेद रंग में, सेंट पैट्रिक के जन्मदिन पर हरे रंग में तथा अन्य छुट्टियों के मौके पर सीजन के मुताबिक रंगों की रोशनी रहती है। वर्ष 2004 की एक रात यह इमारत मूल *किंगकांग* फिल्म की स्टार फे व्रे की याद में (जिनका कि हाल में ही निधन हो गया था) 15 मिनट तक अंधेरे में डूबी रही। वह इस बिल्डिंग से जुड़े अपने अनुभवों को हमेशा याद किया करती थीं। फे व्रे ही वह महिला थीं, जिनको लेकर वह विशाल गोरिल्ला एम्पायर स्टेट की छत पर चढ़ा था।

अपनी आत्मकथा में वह लिखती हैं, ''मैं जब भी न्यूयॉर्क आती और इस खूबसूरत बुलंद इमारत को देखती तो मेरे दिल की धड़कनें बढ़ जाती थीं।'' □

माइकल जे फ्राइडमैन *अमेरिकी विदेश विभाग* (http://usinfo.state.gov) *के अंतर्राष्ट्रीय सूचना कार्यक्रम ब्यूरो के प्रकाशन वॉशिंगटन फाइल के लिए लिखते हैं।*